"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 06, Issue: 05, Sept. – Oct. 2019 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) – 5.266

स्त्री पुरुष सम्बन्ध एक ऐतिहासिक परिदृश्य

डॉ रेखा वसंतराव मुले
सहायक प्राध्यापक
वसन्तदादा पाटिल कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय
पटोदा जिला बीड, महाराष्ट्र.

नवाँ दशक स्त्री पुरुष सम्बन्धों के प्रति नवीन आयाम प्रस्तुत करता है। स्त्री पुरुष सम्बन्ध के प्रमुख आधार प्रेम काम तथा विवाह सें जुडे सवालों की पडताल करते हुए सम्भावित विकल्पों की सविस्तर चर्चा है। स्त्रीपुरुषों सम्बन्धो की बिकास यात्रा का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

विश्व साहित्य की शुरुआत भले कहानियों से हुई है। बल्कि गद्य विआओं मे उपन्यास ही जीवन के परत दर पर अनुभव एवं सुख दु:ख की कथा केा गहराई से व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है।

स्त्री पुरुष के सम्बन्धों का आधार विवाह ही नही इतर भी है ये आधार है काम सम्बधी प्रेम सम्बन्धी तथा इतर

हिन्दी उपन्यासेंमे स्त्रीपुरुष के दापत्य एवं दाम्पत्येत्तर सम्बन्ध हर युग में किस प्रकार व्यक्त हुए है। इसके लिए हम हिन्दी उपन्यास के प्रारम्भ से १९८० तक चित्रन करेंगे सुविधा के लिये उपन्यास के कालक्रम को विभाजित किया गया है।

१.पूर्व प्रेमचंन्द युग २. प्रेमचंन्द युग ३. प्रेम चंदोत्तर युग ४. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास ५. साठोतरी उन्यास

१. पूर्व प्रेमचंन्द युग :- यहाँ पर स्त्री की बुध्दिमत्ता, कार्यपटुता व्यवहार कुशलता , विनय शीलता घर की चार दीवारी में ही सिमट जाती। प्राय: उसे अन्य स्त्री को सैतया रखैल के रुप में भी झेलना पडता। इस युग में प्रेम विवाहो को कम समर्थन विवाहितर प्रेमसंम्बन्ध पुरुषोका अमर्यादित आचर ही दिखलाई पडता है। इन सभी उपन्यासकारों केा ब्रिटिश राज का सामना करणा पडा। अत: अपनी भारतीय संस्कृति व परम्पराओं से चिपटे रहने में ही वे अपने दायित्व को पूर्ण करते नजर आना चाहते थे। उपरोक्त पंक्तियोंसे पत्ता चलता है कि, इस युग का लेखक स्त्रियों को पतिव्रत धर्म की शिक्षा ही देने का आकांक्षी था।

२. प्रेमचन्द युग :- हिन्दी में प्रेमचन्द के पदार्पण के पूर्व बंगल में खूब उपन्यास लिखे जा रहै थे। ये सभी उपन्यास यथार्थ जीवन की झाँकी प्रस्तुत करते थे। इस उपन्यासों पर पश्चिम के लेखको का प्रभाव पडा था। प्रेमचंद युग में एक और तो भारत मे गांधीवादी विचारधारा चल रही थी। दूसरी और पश्चिम का प्रभाव भी पडा था।

स्त्रीपुरुष सम्बन्धो की समस्योओं को उन्होने भी उभारा परन्तु वे भी पुरुष को देवता रुप में चित्रित करने का मोहन त्याग सके उन्होने स्त्री सेवा त्याग, प्रेम, व समर्पण की ही माँग की है प्रेमचन्दयुग में स्त्री पुरुष

दोनों को पुसनी मान्यताओं में जीते बताया है। दापत्य सन्बन्धो की मधुरता के लिए प्रेम को आवश्यक बताया स्त्रीपुरुष में प्रेम व दोस्ती को प्रेमचंन्द ने महत्व दिया है। यहा स्त्रीव पुरुष सम्बन्धो में स्त्री व पुरुष की दोस्ती को प्रेम पदर्शन का नाम न देकर उसे आत्मिक भाव की परिभाषा दी गई।

दाम्पत्य की दृष्टि से प्रेमचन्द के सेवासदन, निर्मला, प्रेमाश्रम गबन और गोदान उपन्यास उल्लेखीनीय है। डॉ. सिन्हा के अनुसार इन सभी उपन्यासो का मूल्य स्वर नारी की यथर्थ स्थिति की पहचान उसे श्रध्दा एवं सम्मान की पात्री समझे जाने का आन्हा न है और उनकी संवेदनशील परिस्थितियों के प्रति हार्दिक सहानुभूति जागृत करने का मर्मस्पर्शी प्रयत्न है। प्रेमचन्द युग के उपन्यास दामपत्य तनाव को उकेरने में सफल हुए। पंरन्तु उन तनावों का विशद चित्रण तो आने वाले दशको में हुआ है।

३. प्रेमचंदोत्तर युग १९५० तक :- नयी सामाजिक चेतना का प्रभाव स्त्री पुरुषों के सम्बधों पर भी पडा वे समान धरातलपर जीवन दिशा के चुनाव में स्वतंत्र हुए सभी लेखाकोने स्त्रीपुरुष की दमित मनोभावनाओं को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया । इस युग के उन्यासों मे स्त्रीपुरुष सम्बन्धो की जटिलता को गहराई से व्यक्त किया।

४. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास :- स्वतंत्र्यता के पश्चात भारत में तेजी से राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव आणे लगे। स्त्री की आत्मनिर्भरता ने उसे आत्मविश्वास दिया। वह घर मे नही बाहर भी चुनौतियों का सामाना करन्ते लगी। नाम तथ धन पाने की तीव्रत्तर आकांसाओं ने उसे विवहितर सम्बन्धो की और ठकेला उसने काम सम्बन्धों से भी परहेज नही किया। परम्परा एव आधुनिकता के बील पाति पत्नी कटुतापूर्ण जिन्दगी जीने लगे। प्रेम में निष्ठा व एक के प्रति समर्पन भारतीय संस्कृति की परिमा जैसी कोई बाल नाही रही पश्चिमी प्रभाव के कारण यौन नैतिकता परिवर्तन हो गई।

५. अज्ञेय का उपन्यास:- नदी के व्दीप स्त्रीपुरुष सम्बन्धो लिये मील का पत्थर कहलाता है। इस युग में उपन्यासेपर मार्क्स के सामाजिक यथार्थ फ्रायड के अवचेतनवाद तथा सार्ग के अस्तिववाद का प्रभाव स्त्री पुरुष सम्बन्धो मे देख सकते है। स्वातत्र्योत्तर काल में आदर्श से यथार्थ परम्परा से प्रयोग की और उपन्यास करोंने लिखित बदलावों को कथ्य मे उठाया है साथ ही पति पन्ती के बीच के सम्बधो के परिवर्तित आयाम रेखांकित किया है।

६. साठोत्तरी हिन्दी उपन्या :- साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास स्त्रीपुरुष सम्बन्धो मे मोह भंग की स्थिति से आगे का वर्णन करते है। भारतीय समाज एवं साहितय मे इन दोन दशको को संक्रमण युग की संज्ञा दिय जा सकती है। समाजवाद तथा सुधारवादी आन्दोलन जस के तस रह जये स्त्री पुरुष यथार्थ के धरातलपर जीवन

की चुनैतियों का सामना करने लगे। बदलती हुई अर्थ व्यवस्था एवं समाज व्यवस्था के कारण वैवाहिक परिस्थितीयों में क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित हुए । यांत्रिक जीवन ने परम्पराओं को तोडने लगी। स्त्री की संवेदन हीनता ही इस से एकाकीपन मूल्यहीनता व अजनीबीपन ने दामपत्य जीवन में प्रवेश किया। अनेक स्त्री पुरुष से संम्बन्ध के बावजूद वैवाहिक जीवन के परिवार के लिए आवश्यक माना गया।

हम कह सकते है कि प्रेमचन्द, जैनेद्र, यशपाल अज्ञेय के युग की तुलना मे स्त्री पुरुष के सम्बन्ध रोमांटिक नत्र यथार्थ के धरातल से जडे है। यौन विकृतियों के बावजूद विविध आयामी स्त्री पुरुष को इस युग में अने कोबो से उभारा गय है।

रामधारिसिंह दिनकर ककहते है कि जो भी पुरुष निष्पाप है निष्कलंक है। निडर है, उसे प्रणाम करो, क्यो कि वह छोटा मोटा ईश्वर है।

स्त्रीपुरुष सम्बन्ध की यात्रा से गुजरते हुहे लगता है स्त्री पुरुष ने सफर तय किया है। हिन्दी उपन्यासों में स्त्री पुरुष सफर तय किया है।

हिन्दी उपन्यासों मे स्त्री पुरुष सम्बन्धो की कथाए अधिक पाई जाती है। उपन्यासों के इस विशाल क्षेत्र अर्थात काम सम्बन्धा पर प्रमाण डालने के कारण फ्रायड के विचार प्रमुख है वे सदाचर्चा के विषय बन रहै। मार्क्सवाद का प्रमाण भी जीवन के हरक्षेत्र को प्रमाणित करता है। समग्र जीवन के चिन्तन के विषय बनाता है। इसलिए स्त्री पुरुष सम्बन्धों मे इसका महत्व गौण नही है।

इस प्रकार यह दशक स्त्रीपुरुष सम्बन्धो के सूक्ष्म स्तर अनुछूई अनुभूतियों और मानव मन की गहराई की परतों की पडताल और बेबाकी का दशक है।

संदर्भ सूचि :-

१. आधुनिक कथा साहित्य और मनोविज्ञान डॉ. देवराज उपाध्याय- वासुदेव प्रकाशन बिहार
२. आधुनिक हिन्दी उपन्यासो में प्रेम की परिकल्पना डॉ. विजय- रचना प्रकाशन इलाहाकाद
३. धर्म और समाज - डॉ. राधाकृष्णन राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली
४. प्रेम और नैतिकता का समाजशास्त्र डॉ. विमल हिमाचल पुस्तक भंडार दिल्ली
५. हिन्दी उपन्यास उद्‌भव और विकास डॉ. सुरेश सिन्हा लोभारती इलाबाद.